

असम वैभव, असम सौरभ और असम गौरव में
माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चन्द कटारिया का अभिभाषण

दिनांक : 13 फरवरी 2024, मंगलवार	समय :	स्थान : गुवाहाटी
---------------------------------	-------	------------------

नमस्कार !

आज श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र में प्रतिष्ठित “असम वैभव”, “असम सौरव” और “असम गौरव” पुरस्कार प्रदान करने के इस कार्यक्रम में आप सभी के बीच उपस्थित होना मेरे लिए वास्तव में गर्व की बात है। ये पुरस्कार विशिष्ट व्यक्तियों को विभिन्न क्षेत्रों में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किए जा रहे हैं। मैं इन प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित व्यक्तियों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि आज ये प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त करने वाली सभी हस्तियां युवाओं के लिए प्रेरणा बनेंगी और वे अपने अद्वितीय योगदान से हमारे समाज, हमारे राष्ट्र को समृद्ध करना जारी रखेंगे। आप सभी सही मायनों में हमारे देश की निधि और शक्ति हैं। आप निश्चित रूप से हमारी युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं।

“असम वैभव”, “असम सौरव” और “असम गौरव” पुरस्कार सर्वोच्च सरकारी और सामाजिक मान्यता के अनुरूप अत्यधिक सम्मान का प्रतीक हैं। आपने ये पुरस्कार प्राप्त कर हमें गौरवान्वित किया है और हमारे राज्य का मान बढ़ाया है। मैं इसके लिए जूरी के सदस्यों को भी बधाई देता हूँ।

आज का दिन बहुत महत्वपूर्ण है। माननीय उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ जी आज हमारे बीच उपस्थित होकर इस पुरस्कार समारोह की गरिमा बढ़ा रहे हैं। मैं, असम के लोगों की ओर से माननीय उपराष्ट्रपति श्री धनखड़ जी का हार्दिक स्वागत करता हूँ। श्री धनखड़ जी का ज्ञान, बुद्धिमता और उनका मार्गदर्शन हमारे महान राष्ट्र के लिए संपत्ति है।

माननीय उपराष्ट्रपति श्री धनखड़ जी,

आपकी असम यात्रा हमारे लिए बहुत गर्व की बात है। यह हमारे लिए भी सम्मान की बात है कि माननीय उपराष्ट्रपति जी उन हस्तियों को सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार प्रदान करने के लिए हमारे बीच उपस्थित हुए हैं, जिन्होंने हमें जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में गौरवान्वित किया है। इन्हीं जैसे लोगों के उत्कृष्ट योगदान से हमारा समाज सभी मापदंडों पर आगे बढ़ रहा है।

मित्रों,

आज हम ऐसी दुनिया में रहते हैं, जो वैश्विक रूप से एक-दूसरे से जुड़ा हुआ है। किसी भी प्रगतिशील समाज के लिए यह आवश्यक है कि नागरिकों के पास अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण, आधुनिक परिप्रेक्ष्य, डिजिटल और पेशेवर कौशल हो ताकि राष्ट्र को विकास के पथ पर आगे ले जाया सके।

हमें इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अपने देश के युवाओं को राष्ट्र निर्माण के कार्यों में शामिल करना होगा और उन्हें तैयार करना होगा। साथ ही उनमें भाईचारे, प्रेम और करुणा की भावना भी जागृत करने की आवश्यकता है।

भारत एक युवा राष्ट्र है, जिसकी आधी से अधिक आबादी पच्चीस वर्ष या उससे कम उम्र की है। युवाओं की क्षमता का सही मायने में दोहन करने के लिए, हमें उन्हें भारतीय सभ्यता और सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति जागरूक करना होगा। उनमें मातृभूमि के प्रति प्रेम, महिलाओं के प्रति सम्मान; जीवन में सच्चाई और ईमानदारी, आचरण में अनुशासन और संयम और कार्य में जिम्मेदारी और सभी के लिए करुणा की भावना को विकसित करने की आवश्यकता है।

हमारे महान राष्ट्र के प्राचीन लोकाचार से प्राप्त शक्ति के आधार पर, आज माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी राष्ट्र के पुनर्निर्माण के लिए एक आंदोलन का नेतृत्व कर रहे हैं। यह आंदोलन हमारे देश की 5000 वर्ष पुरानी संस्कृति और सभ्यता के पुनरुत्थान के लिए है। यह आंदोलन वंचितों को अधिकार और सम्मान दिलाने, करोड़ों भारतीयों के सपनों को पूरा करने के लिए है। यह आंदोलन वैश्विक परिदृश्य में भारत की सशक्त छवि स्थापित करने और देश को फिर से विश्वगुरु बनाने के लिए है।

ऐसी पृष्ठभूमि में, मैं पूर्वोत्तर भारत की सांस्कृतिक विरासत के बारे में बताना चाहूंगा, जो प्राचीन काल से ही महान भारतीय सभ्यता को समृद्ध करती रही है।

हमारे पूर्वोत्तर भारत को प्रकृति की आशीर्वाद प्राप्त है। रहस्यमय प्रकृति, मिथक और किंवदंतियाँ, वन्य जीवन, विविध वनस्पतियाँ और जीव इसे दुनिया के सबसे विविध क्षेत्रों में से एक बनाते हैं। यह क्षेत्र विशिष्ट संस्कृति, भाषाएं, परंपराएं, विरासत, भोजन और जीवन शैली वाले कई जातीय समूहों का निवास स्थल है, जो इस क्षेत्र को अविश्वसनीय रूप से जीवंत और रंगीन बनाता है।

पूर्वोत्तर क्षेत्र में लोग विभिन्न रीति-रिवाजों, परंपराओं और मान्यताओं का पालन करते हैं, लेकिन एक चीज जो हमें एक साथ बांधती है, वह भारतीय के रूप में हमारी पहचान है। यह पहचान विकसित भारत के हमारे सपने को साकार करने के लिए एकजुट होकर काम करने की हमारी प्रेरणा शक्ति है।

माननीय मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा जी के नेतृत्व में सरकार ने सभी वर्गों के लोगों के कल्याण को सुविधाजनक बनाकर हमारे राज्य के विकास में तेजी लाने की जिम्मेदारी का सफलतापूर्वक पालन कर रहे हैं। मुझे विश्वास है कि हमारी सरकार लोगों के सक्रिय समर्थन एवं सहयोग से निश्चित रूप से असम को देश के सबसे विकसित राज्यों में से एक बनाएगी।

इस अवसर पर मैं महान वैष्णव संत, दार्शनिक महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव और उनके शिष्य महापुरुष माधवदेव को अपनी शिक्षा से राज्य को समृद्ध करने के लिए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

इन्हीं कुछ शब्दों के साथ, मैं एक बार फिर माननीय उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ जी को उनकी असम यात्रा के लिए धन्यवाद देता हूँ। आज इस कार्यक्रम में आपकी गरिमामय उपस्थिति ने हम सभी को उत्साहित किया है।

अंत में, मैं पुनः सभी 22 पुरस्कार विजेताओं को उनकी उपलब्धि और उत्कृष्ट सेवा के लिए बधाई देता हूँ।

धन्यवाद।

जय हिन्द।